

दिनांक
6-8-20

वैद्यकिभाग
शास्त्री 111 वर्षः
जातिशास्त्रः

प्रथमोऽहभागः

1) सूत्रः →

॥ भोजनं मधुरं स्निग्धम् ॥

व्याख्याः →

अब इस सूत्र के द्वारा महर्षि हमें भोजन कैसा करना चाहिए इसके बारे में बता रहे हैं कहते हैं कि हमें मधुर और स्निग्ध भोजन करना चाहिए !

॥ घृतपायं मधुरपायं चान्नं शुक्लितं ॥

अर्थात्, मधुर रस से भरपूर और घी से भरपूर अन्न को खाना चाहिए !

2) सूत्रः →

॥ वर्ण्येषु विवेकायम् ॥

व्याख्याः →

अब महर्षि वर्णों के बारे में बता रहे हैं कि वर्णों के दोषों के विवेचन के लिए उपर्युक्त विधानों का पालन करना चाहिए । अथवा वर्णों के दोषों का स्पष्ट रूप से

जानने के लिए व्यंजनों का उच्चारण करना चाहिए।

॥ वण अकाराक्षरः दीर्घा दीर्घाः अस्थानजत्वाक्षरः
तद्विवेकाम ॥ ।

अर्थात् अकार आदि वण हैं उनके दीर्घ, उन वणदीर्घों के
विवेचन के लिए दृष्टक करने के लिए। जैसे - तीन मात्रा
वाले स्वर दी मात्रा, दी मात्रा वाले स्वर का एक
मात्रा काल में उच्चारण, अनुनासिक स्वर के एक
अंश का अनुनासिक उच्चारण। जैसे - 'महो इन्द्रः'
में। उसी प्रकार व्यंजनों के अनेक प्रकार के दीर्घ
होते हैं ॥ उच्च वर्णों से बाद में फ्रिक्चम स्पर्श वण होने
पर भ्रम करना दीर्घ है।

॥ इति ॥

Anant K. Guleri
वेद विभाग
6-8-20